मई २०१७

दादा भगवान परिवार का

कीमत ₹ १२/-

अक्रम एक्सप्रेस

छुट्टियों का मज़ा...

छुट्टियों का मज़ा...

संपादकीय

बालमित्रों,

"आ...ह! परीक्षा खत्म हो गई, छुट्टियाँ आ गईं। अब तो जो करना होगा वह कर पाएँगे। जितना सोना होगा, जितना खेलना होगा, जितना घूमना-फिरना होगा... करेंगे... कोई रोकने वाला नहीं, कोई टोकने वाला नहीं है।"

बात तो ठीक ही है। यह वेकेशन का समय, आपका खुद का समय कहा जाएगा। इस अंक को इसीलिए बनाया गया है कि आपका समय व्यर्थ न जाए। खूब मज़े करो। लेकिन साथ में अच्छी समझ भी प्राप्त कर लो ताकि आपका आने वाला कल उज्जवल बने। इसलिए "छुट्टियों का मज़ा..." इस अंक को ज़रूर पढ़ना।

-डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकः
डिम्पल मेहता
वर्ष : ५ अंकः २
अखंड क्रमांकः ५०
मई २०१७

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपयें
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपयें
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादा जी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : ये जो भूकंप आते हैं, आँधी आती है, लड़ाइयाँ होती हैं, वह सब हानि-वृद्धि के नियम के अनुसार होता है?

दादाश्री : नहीं, कर्म के उदय के अनुसार। सब उदय ही भोग रहे हैं।

प्रश्नकर्ता : जिन्हें भुगतना है, उनका उदय?

दादाश्री : हाँ, मनुष्यों का, जानवरों का, सभी का सामूहिक उदय आता है। देखो न, यह हीरोशिमा और नागासाकी का उदय आया था न!

प्रश्नकर्ता : जिस तरह एक आदमी पाप करता है और दूसरी ओर कुछ लोग सामूहिक पाप भी करते हैं। तो क्या उसका बदला सामूहिक ढंग से मिलेगा? जैसे कि एक आदमी चोरी करने गया और दस लोग समूह में डाका डालने गए, तो क्या उसका दंड सामूहिक मिलेगा?

दादाश्री : हाँ। लेकिन दसों को थोड़ा-बहुत मिलेगा। उनके भाव कैसे हैं, उस पर आधारित है। यदि कोई आदमी ऐसा कहता हो कि, "मुझे ज़बरदस्ती चोरी करने जाना पड़ता है", उसका ऐसा भाव हो। यानी जितना स्ट्रोंग भाव है, उसके अनुसार सभी हिसाब चुकाने पड़ते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह जो कुदरती प्रकोप होते हैं, "किसी जगह प्लेन गिर गया और इतने मर गए" और "किसी जगह ज्वालामुखी फट गया और एक साथ दो हज़ार लोग मर गए", क्या यह उन सभी के सामूहिक दंड का परिणाम है?

दादाश्री : हाँ, उन सभी का हिसाब। उसमें सिर्फ हिसाब वाले ही पकड़ में आते हैं। कोई और नहीं पकड़ में आता। आज वह मुंबई गया हो और कल यहाँ भूकंप आ जाए, और मुंबई वाले यहाँ आए होते हैं। अतः सब हिसाब है।

प्रश्नकर्ता : हं... अकाल पड़ना, किसी जगह तेज़ बाढ़ आ जाना, किसी जगह भूकंप में लाखों का मर जाना, ये सब कुदरती प्रकोप, क्या वे सामूहिक परिणाम हैं?

दादाश्री : हाँ, सामूहिक परिणाम ही हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी जिस समय दंड मिलना होता है, तब कहीं से भी खिंचकर क्या वहाँ पहुँच ही जाता है?

दादाश्री : यह कुदरत ही वहाँ ले जाती है और (कर्म) पका देती है, सेंक देती है। उसे प्लेन में लाकर प्लेन गिरवा देती है। सब हिसाब है, एक्ज़ेक्ट न्याय है। बिल्कुल धर्म के काँटे की तरह।

लोभी प्रकृति वाले को कैसी भावना करनी चाहिए कि मेरा तन, मन और धन सर्वस्व जगत् कल्याण के लिए खर्च हो। अर्थात् नई भावना सुधारनी है। उसके फल स्वरूप अगले जन्म में बड़ा मन मिलेगा।

जितने समय के लिए हम बाघ और शेर को शुद्धात्मा स्वरूप से देखते हैं उतने समय के लिए वे अपना पाशविक धर्म भूल जाते हैं।

यह तो नई ही बात है !

जहाँ अच्छा नहीं लगता वहीं शक्ति जागृत करनी होती है। जहाँ अच्छा लगता है वहाँ तो शक्ति है ही। अच्छा नहीं लगता, वह तो कमज़ोरी है। जितने एडजस्टमेन्ट लोगे, उतनी शक्ति बढ़ेगी और अशक्ति कम हो जाएगी।
“जिससे दिल को ठंडक मिले फिर भी ऐसी बात को स्वीकार नहीं करे और खुद के मत के अनुसार चले”, उसे आड़ाई कहते हैं।

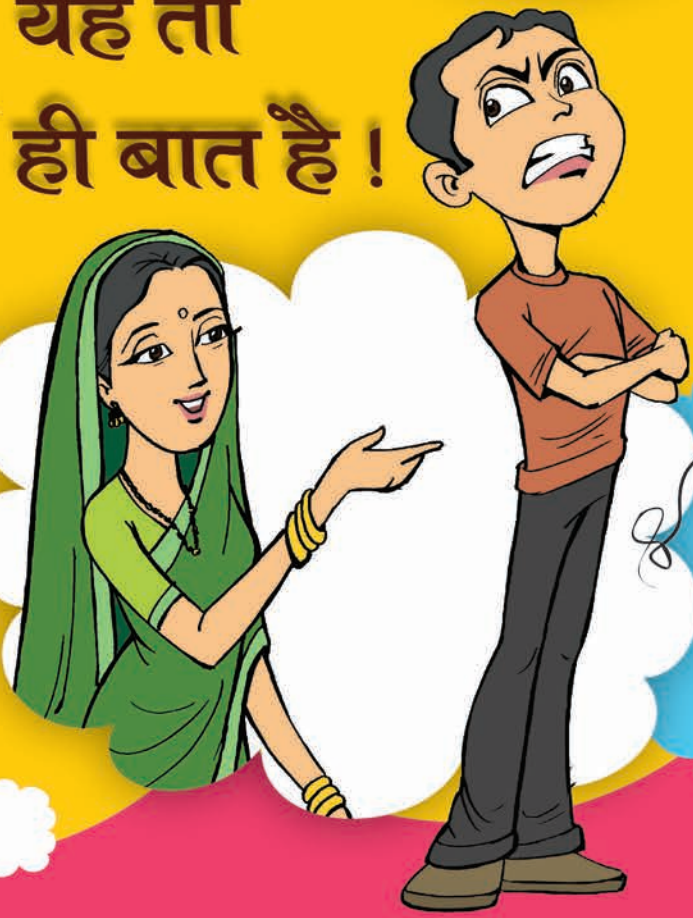

"मैं अपना काम कर रहा हूँ..."

एक अपंग और भोला भाला बच्चा हॉस्पिटल के अंदर आया। उसके हाथ में अगरबत्ती के पैकेट्स थे। वह सब से पूछने लगा, "अगरबत्ती लेनी है?"

बच्चे को देखकर रिसेप्शन काउन्टर पर बैठा हुआ व्यक्ति ज़ोर से चिल्लाया,

"तू फिर से आ गया? चल बाहर निकल। तुझे मना किया है फिर भी तू चला आता है!"

उसने बहुत ही बुरी तरह से बच्चे को डाँट दिया। अपने बच्चे का ट्रीटमेन्ट करवाने आए एक सज्जन ने उस बच्चे से पूछा, "तुझे इतनी बुरी तरह से डाँटते हैं फिर भी तू यहाँ क्यों आ जाता है?"

नासमझ दिखने वाले बच्चे ने बहुत बड़ी बात कह दी। उस ने कहा, "मैं अपना काम करता हूँ, और वे अपना काम करते हैं! मेरा काम अगरबत्ती बेचने का है, इसलिए मैं अगरबत्ती बेचता हूँ। उनका काम मुझे निकाल देने का है, इसलिए वे मुझे निकाल देते हैं।"

मैं अपंग हूँ। कल मुझे घर लौटने में देर हो गई थी। जब घर पहुँचा तब मेरी माँ रो रही थी। मैंने उससे पूछा तो कहने लगी, "मुझे तेरी चिंता हो रही थी। तुझे कुछ हो जाता तो?"

तब मैंने उन्हें भी यही समझाया कि, "चिंता करने का काम आपका नहीं है। आप घर का ध्यान रखती हो, सब के लिए खाना बनाती हो। यदि आपकी जगह मैं खाना बनाऊँ तो क्या आपको अच्छा लगेगा? नहीं लगेगा न? मेरी चिंता करने का काम तो भगवान का है न? यदि आप भगवान के काम में दखल करोगी तो भगवान को भी अच्छा नहीं लगेगा!"

उस सज्जन ने कहा कि वह बालक तो इतनी बात कह कर चला गया, लेकिन मुझे ज़िंदगी का पाठ पढ़ा गया।

मैं एकदम हल्का हो गया। मैंने सोचा कि "मैं अपने बेटे की चिंता व्यर्थ ही कर रहा हूँ। यह मेरा काम नहीं है। मेरा काम तो उसे बेस्ट ट्रीटमेन्ट दिलवाने का है, उसकी देखभाल करने का है और उसे दर्द से आराम मिले ऐसा प्रयत्न करने का है। मैं अपना काम करूँ और दूसरा काम जिसका है उस पर छोड़ दूँ।

मुझे तो बस इतना ही ध्यान रखना है कि मुझे जो रोल अदा करना है, उसे मैं ठीक ढंग से अदा कर रहा हूँ या नहीं?"

मित्रों, जिस बदलाव का आप इंतज़ार कर रहे थे उसकी एक झलक...

जैसे आपकी प्रगति हो रही है, वैसे ही मेरी भी...

Kids.dadabhagwan.org

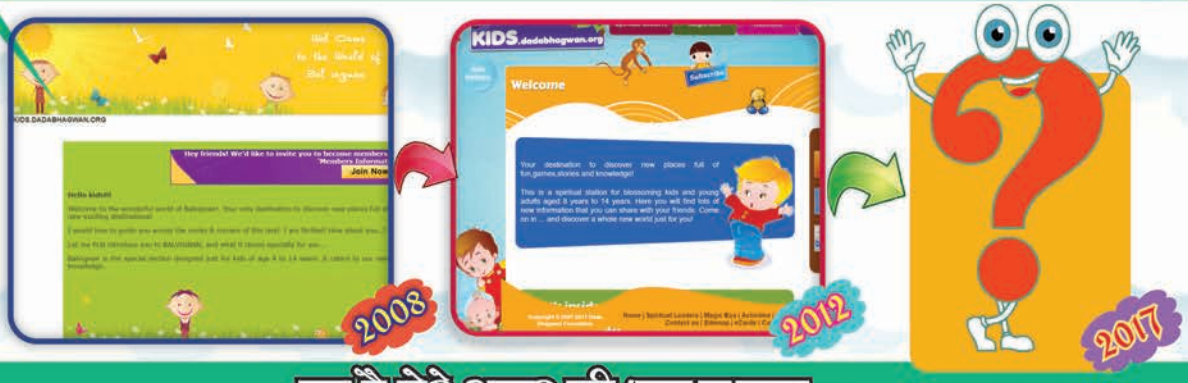

यह है मेरे सफर की एक झलक...

EXPERIMENT CORNER

घर में ही कर सकें ऐसे दिलचस्प प्रयोग... मोज-मस्ती से भरपूर अक्रम विज्ञान के प्रयोग को जानो और खुद पर आज़माओ!

पहले कभी न सुनी - न पढ़ी ऐसी अनोखी बातें कि आप बोल उठोगे

'OH REALLY?'

STORIES...

"आपकी" दुनिया... आपकी ही Feelings के साथ - कहानियों की एक अनोखी दुनिया!

GAMES CORNER

Ipad हो या मोबाइल... खेलने में मज़ा आए ऐसी गेम्स!

यह सब आपको एक साथ कहाँ मिलेगा? देखिए, पेज नं. १९ पर क्या है?

असली आनंद

थैली में से संतरे का एक टुकड़ा चखा। मुँह बिगाड़ते हुए,

लेकिन तब तक तो वह व्यक्ति और उसकी पत्नी जा चुके थे।

यह वृद्धा हमेशा मीठे संतरे ही बेचती हैं लेकिन पैसे की कमी की वजह से कभी भी खुद नहीं खाती।
ऐसा करके मैं उन्हें एक संतरा खिला देता हूँ ताकि उन्हें संतरे खाने के लिए एक पैसा भी खर्च नहीं करना पड़े।
इस ओर उस वृद्धा के पास बैठकर सब्ज़ी बेचने वाली स्त्री यह सब रोज़ देखती थी।
यह व्यक्ति तुम्हारे संतरों के लिए हर बार बोलता है और मैंने यह भी देखा है कि तुम उसे हमेशा ज्यादा संतरे तोलकर देती हो। ऐसा क्यों?
मैं उसे इसलिए ज्यादा देती हूँ ताकि एक संतरा मुझे देने के बाद उसे कम नहीं पड़े।
क्योंकि मैं जानती हूँ कि, वह यह सब मुझे संतरा खिलाने के लिए ही करता है और वह खुद ऐसा समझता है कि, "मुझे इसका कुछ पता नहीं चलता।"
अपने आसपास रहने वाले लोगों के लिए प्रेम की ऐसी भावना में ही ज़िंदगी का असली आनंद छुपा हुआ होता है।
हे भगवान! हमें सभी के लिए हमेशा ऐसी अद्भुत भावना और व्यवहार करने की शक्ति दीजिए।

समर कैम्प की झलक

४ से ७ साल के बच्चों के लिए

सूरत

८ से १२ साल के बच्चों के लिए

भरूच

बड़ौदा

सीमंधर सिटी

सुरेन्द्रनगर

वलसाड

मुंबई

सूरत

मनपसंद

जय सच्चिदानंद पूज्य श्री। मैं जी.एम.एच.टी. हूँ। मैंने छः महीने पहले ज्ञान लिया है। जब मैं मम्मी के पेट में थी।

मैं कब से आपको प्रत्यक्ष देखने के लिए तरस रही थी। मेरे जैसे छोटे बच्चे के लिए छः महीने बहुत होते हैं।

आज आपको देखकर मुझे बहुत आनंद हो रहा है। आप मुझे अपनी गोद में बैठाओगे?

आहाहाहा, मैं निगोद से बाहर निकली तब से इस क्षण का इंतज़ार कर रही थी।

कहानी

पूज्य श्री आपको देखकर बहुत प्यार आता है।

अब मैं जी.एम.एच.टी. में से बी.एम.एच.टी. में प्रमोट हुई हूँ।

पूज्य श्री आपको पता है, आपके पास आने का मेरा दूसरा हेतु भी था, मेरे पेरेन्ट्स को ज्ञान दिलवाने का।

आज मेरी दोनों इच्छा पूरी हो गई। अब मैं शांति से "दादा भगवान के असीम जय जयकार हो" करूँगी।

बालक वज्रस्वामी

वज्रस्वामी की माता का नाम सुनंदा था। उनके पिता वैरागी थे। उन्हें संसार में कोई रूचि नहीं थी। लेकिन पत्नी सुनंदा उन्हें दीक्षा लेने की अनुमति नहीं दे रही थी। उन्होंने अपने पति के सामने एक शर्त रखी थी, "जब मैं गर्भवति हो जाऊँ तब आप संसार त्यागकर चले जाना, उससे पहले नहीं।" सुनंदा के पति दीक्षा लेने के लिए बेताब थे।

और एक दिन सुनंदा गर्भवति हो गई। यह समाचार सुनते ही शर्त के अनुसार उनके पति प्रभु के रास्ते पर जाने के लिए निकल पड़े और तुरंत ही दीक्षा ले ली। संसार की माया से छुटकारा मिलने से उन्हें बहुत आनंद हुआ।

इस ओर समय आने पर सुनंदा के गर्भ से वज्रस्वामी ने जन्म लिया। अड़ोसी-पड़ोसी सुनंदा के यहाँ आए और पुत्र जन्म की बधाई दी।

उस समय किसी ने सुनंदा से कहा, "सुनंदा, इस बच्चे के पिता ने संसार त्यागकर दीक्षा ग्रहण कर ली है। यदि दीक्षा नहीं ली होती तो इस बच्चे का जन्मोत्सव भव्य ढंग से मनाया जाता।"

सुनंदा मौन रही।

लेकिन उन शब्दों का असर नवजात शिशु पर पड़ा। दीक्षा शब्द सुनते ही वज्रस्वामी को जाति-स्मरण ज्ञान हो गया और पिता की तरह ही दीक्षा लेकर आत्मकल्याण करने की भावना जागी।

वज्रस्वामी का अभी जन्म हुआ ही था। उन्हें लगा कि माता को अपनी संतान पर बहुत ही लगाव और प्रेम होता है। माता ममता के बंधन से नहीं छूट सकती। मेरा तो अभी जन्म हुआ है, तो माता मुझे कैसे दीक्षा दिलवाएँगी? क्या करना चाहिए?

ऐसा सोचते-सोचते बालक वज्रस्वामी को एक उपाय सूझा। वे अभी बोल तो नहीं सकते थे। क्योंकि वे अभी नवजात सुकोमल बालक थे।

उन्होंने माता को परेशान करने के लिए रोना शुरू कर दिया। वे बिना किसी वजह के रोने लगे। उन्हें लगा कि यदि मैं रोना चालू रखूँगा तो माता मुझसे परेशान होकर, मुझे

पिता को सौंप देंगी।

और इस तरह वे लगातार रोते ही रहे...

माता सुनंदा अपने प्यारे बालक को शांत रखने के कई प्रयत्न करने लगीं लेकिन वज्रस्वामी के हृदय में प्रव्रज्या अंगीकार करने का भाव चल रहा था।

वज्रस्वामी एक दिन नहीं, दो दिन नहीं, एक-दो महीने भी नहीं लेकिन लगातार वे छः महीने तक रोते रहे। लगातार छः महीने तक बालक के रोने से माता सुनंदा परेशान हो गई। क्या करूँ? उसका उपाय नहीं मिल रहा था।

तब किसी ने सलाह दी, "यह बालक जब से जन्मा है तब से रो ही रहा है। इसे उसके पिता को सौंप दो। वही उत्तम मार्ग है।"

सुनंदा को यह सलाह अच्छी लगी।

सुनंदा वज्रस्वामी को लेकर जहाँ उनके पति साधुपने में विचरण कर रहे थे, उस नगरी के उपाश्रय में आई।

उन्होंने अपने दीक्षित पति को भाव से वंदन किया और दृढ़ स्वर में कहा, "यह आपका बेटा... जन्मा है तब से उसने रोना बंद ही नहीं किया है... उसके लगातार रोने से अब मैं थक गई हूँ... उसे चुप करने के सभी उपाय किए लेकिन मुझे सफलता नहीं मिली। अब अपने पुत्र को आप ही संभालिए..."

ऐसा कहकर सुनंदा ने वज्रस्वामी को सौंप दिया।

नन्हें सुकोमल शिशु को सौंपने के बाद सुनंदा अपने घर वापस आ गई।

इस तरफ संघ की श्राविका बहनें छोटे से बच्चे वज्रस्वामी की देखभाल करने लगीं। वज्रस्वामी उपाश्रय में ही बड़े होने लगे। साध्वी जी महाराज अपना धार्मिक अभ्यास करते थे, इसलिए पालने में ही वज्रस्वामी को शास्त्रों का अभ्यास सब याद रहने लगा।

उपाश्रय में आने के बाद वज्रस्वामी ने रोना बंद कर दिया था।

जब सुनंदा को इस बात का पता चला तो उसे लगा कि मैंने अपने बुद्धिशाली और चतुर बालक को सौंप कर उचित नहीं किया। अब मुझे उसे वापस ले आना चाहिए।

ऐसा सोचकर सुनंदा उपाश्रय पहुँची। संघ के प्रमुख से अपने बच्चे को वापस देने की माँग की।

संघ के प्रमुख ने कहा, "आपने यह तेजस्वी और सुशील बालक संघ को अर्पण कर दिया है, इसलिए अब आपको वापस नहीं मिल सकता।"

सुनंदा ने अपने पुत्र को वापस लेने के लिए संघ के प्रमुख से बहुत मिन्नतें की। उन्होंने अपना आँचल फैलाया लेकिन संघ के प्रमुख ने बिल्कुल ध्यान नहीं दिया।

तब सुनंदा ने कहा, "अब मैं महाराजा से फरियाद करके अपनी आँखों के तारे को लेकर ही रहूँगी।"

सुनंदा उत्तर की अपेक्षा किए बिना वहाँ से

सीधा राजभवन गई।

सुनंदा ने राजा से अपनी व्यथा कही। राजा ने कहा, "आपने संघ को बालक सौंप दिया है, इसलिए बालक पर अब उनका हक़ कहा जाएगा। फिर भी आप उसकी माता हो... बालक अभी छोटा है... मैं आपको न्याय दिलवाऊँगा। उपाश्रय में यदि बालक आपके पास आए तो आप उसे ले जाना।"

राजा की बात सुनकर सुनंदा खुश हो गई।

दूसरे दिन महाराजा, मंत्री आदि उपाश्रय आए। सुनंदा भी बहुत सी चीज़ें लेकर उपाश्रय आ गई थी। संघ के प्रमुख को भी हाज़िर रहने के लिए कहा गया तो वे भी आ गए।

सुबह का समय था।

बालक वज्रस्वामी जाग गए थे। अब तो वे चलना भी सीख गए थे।

उपाश्रय में श्रावक भी बड़ी संख्या में इकट्ठे हो गए। सभी को उत्सुकता थी कि बालक सुनंदा के पास जाता है या साधु महाराज के पास...!

महाराजा ने एक ओर बालक की माता सुनंदा को बैठाया, दूसरी ओर साधु महाराज को ओघो (रजोहरण) और मुँहपत्ति के साथ बैठाया। बीच में बालक को बैठा दिया।

सुनंदा ने बालक को लुभाने के लिए खिलौने और मिठाइयाँ उसके सामने रखीं। आसपास संघ के प्रमुख और श्रावक-श्राविकाएँ खड़े थे।

सुनंदा को लगा कि उसका पुत्र उसके पास ज़रूर आएगा।

लेकिन बालक वज्रस्वामी संस्कारी और धर्मानुरागी थे। वे संसार के आकर्षणों में फँस जाएँ ऐसे नहीं थे। उन्हें माता के रखे हुए खिलौने या मिठाई आकर्षित नहीं कर पाए। वे तो तुरंत साधु महाराज के पास गए और मुहपत्ति तथा ओघो लेकर नृत्य करने लगे।

महाराजा ने निर्णय किया कि बालक का मन संसार में नहीं है, अतः वह साधु महाराज के पास ही रहेगा।

संघ ने जैन शासन का जय जयकार किया।

वज्रस्वामी की माता सुनंदा उदास चेहरा लेकर अपने घर वापस लौट गईं। भविष्य में वज्रस्वामी बड़े आचार्य बने।

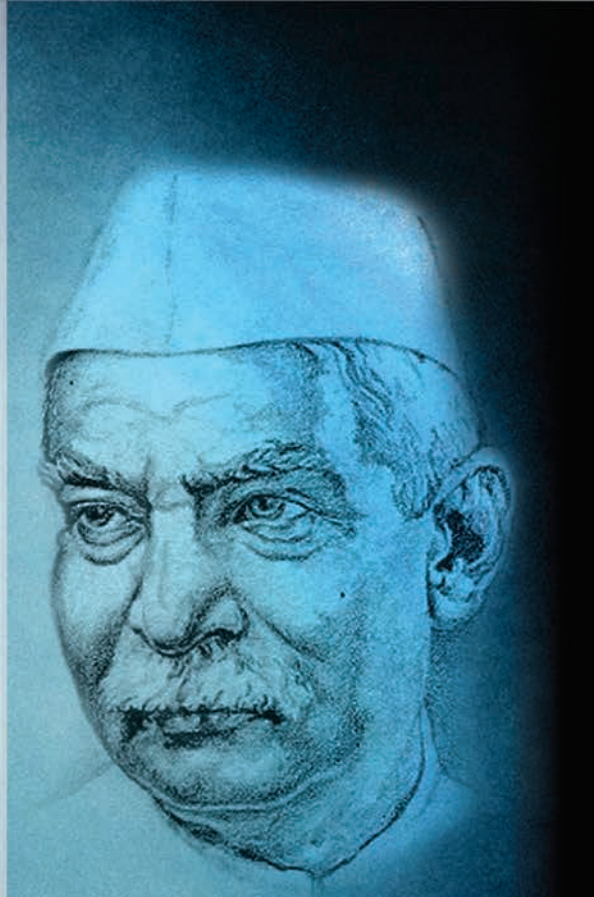

यह उस समय की बात है जब डॉ. राजेन्द्र प्रसाद वकालत करते थे। वे जिस मुवक्किल का केस हाथ में लेते, उसमें उसे जीत ही मिलती थी। उनकी कानूनी समझ बहुत गहरी थी। लेकिन ऐसे केस वे कभी हाथ में नहीं लेते जिनमें असत्य का आश्रय लेना पड़ता। वे असत्य से प्राप्त की हुई कमाई कभी नहीं चाहते थे।

एक बार एक व्यक्ति उनके पास आया और अपना केस लड़ने के लिए राजेन्द्र बाबू से आग्रह किया। इतना ही नहीं, यदि वे उस केस को हाथ में ले लें तो वह बहुत बड़ी फीस देने के लिए भी तैयार था। राजेन्द्र बाबू ने कहा, "आप केस के कागज़ मेरे पास छोड़ जाओ। आज रात को मैं देख लूँगा और कल आपको जवाब दूँगा।"

दूसरे दिन वह व्यक्ति उनके पास आया, तुरंत ही राजेन्द्र प्रसाद ने उसे वे कागज़ वापस करते हुए कहा, "मैं तुम्हारा केस नहीं लड़ सकता।"

उसने कारण पूछा तो राजेन्द्र प्रसाद ने कहा, "आपके पास सभी सबूत हैं। आप १००% केस जीत जाओगे, ऐसा है। आपने एक विधवा स्त्री पर केस किया है। यदि आप जीत जाओगे तो विधवा स्त्री का जीवन यापन का साधन खत्म हो जाएगा। वह बिल्कुल निराधार हो जाएगी! आपको उसकी संपत्ति मिल जाएगी तो आपको तो खुशी होगी लेकिन उस बेचारी विधवा का क्या? उसे तो भूख से मरने के दिन ही देखने पड़ेंगे!

व्यवसाय के साथ-साथ मेरे कई सिद्धांत भी हैं। मेरी तो आपको सलाह है कि आप इस विधवा पर केस मत करो। ऐसा करने में ही मानवता है।

एक बात हमेशा याद रखो कि, किसी को दुःख देकर प्राप्त की हुई संपत्ति, आपको संतोष नहीं देगी, आपके आंतरिक संतोष को नष्ट कर देगी। फिर भी यदि आप उस विधवा पर केस करोगे तो मैं उसका बचाव करूँगा और उससे फीस का एक पैसा भी नहीं लूँगा!"

यह सुनकर उस मुवक्किल ने विधवा पर केस नहीं किया।

सेवा-परोपकार और मानवता जैसे उत्कृष्ट गुणों की वजह से, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अपने जीवन में बहुत प्रगति की और भारत के पहले राष्ट्रपति पद पर विराजमान हुए।

रियल लाइफ स्टॉरी

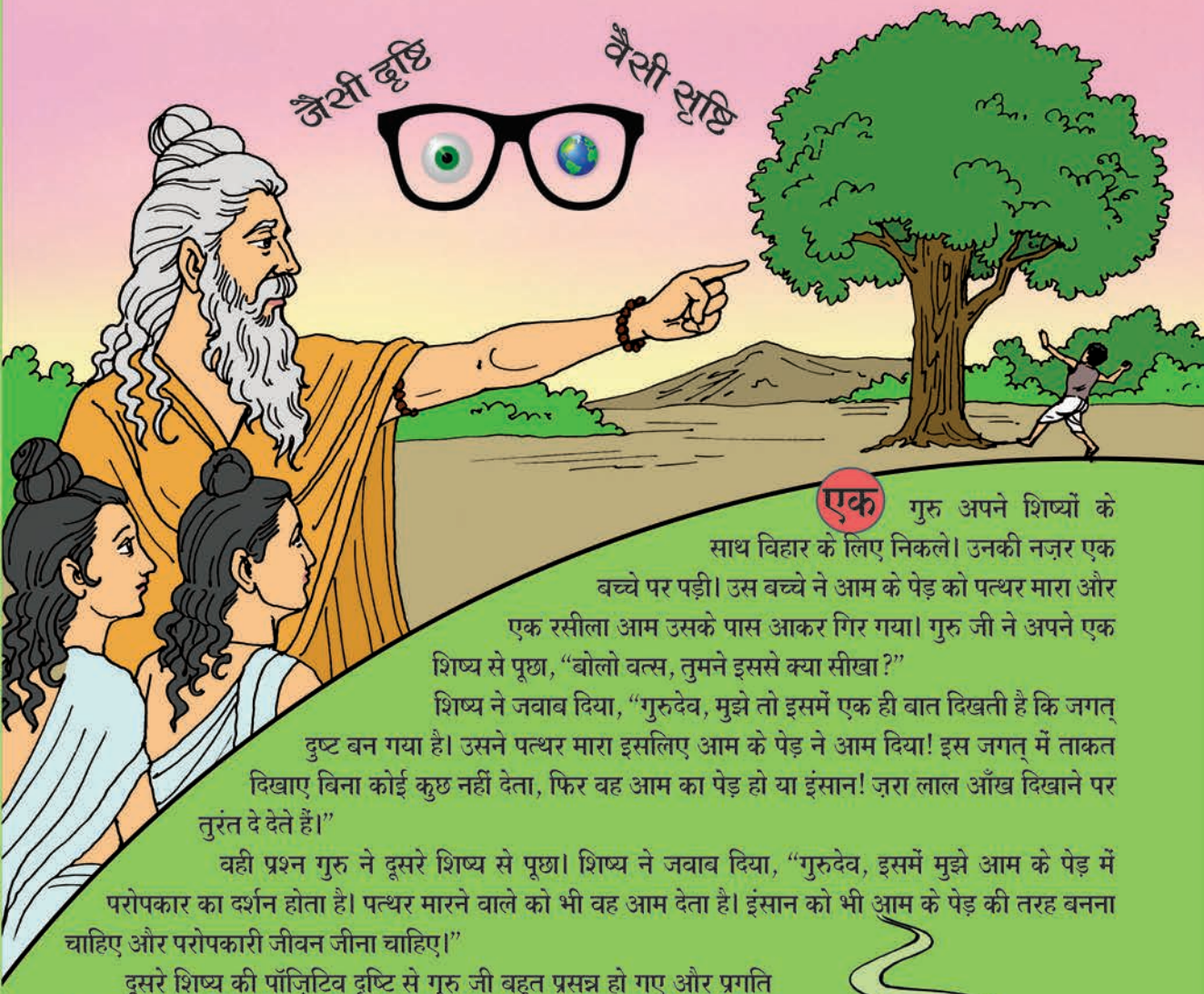

एक गुरु अपने शिष्यों के साथ विहार के लिए निकले। उनकी नज़र एक बच्चे पर पड़ी। उस बच्चे ने आम के पेड़ को पत्थर मारा और एक रसीला आम उसके पास आकर गिर गया। गुरु जी ने अपने एक शिष्य से पूछा, "बोलो वत्स, तुमने इससे क्या सीखा?"

शिष्य ने जवाब दिया, "गुरुदेव, मुझे तो इसमें एक ही बात दिखती है कि जगत् दुष्ट बन गया है। उसने पत्थर मारा इसलिए आम के पेड़ ने आम दिया! इस जगत् में ताकत दिखाए बिना कोई कुछ नहीं देता, फिर वह आम का पेड़ हो या इंसान! ज़रा लाल आँख दिखाने पर तुरंत दे देते हैं।"

वही प्रश्न गुरु ने दूसरे शिष्य से पूछा। शिष्य ने जवाब दिया, "गुरुदेव, इसमें मुझे आम के पेड़ में परोपकार का दर्शन होता है। पत्थर मारने वाले को भी वह आम देता है। इंसान को भी आम के पेड़ की तरह बनना चाहिए और परोपकारी जीवन जीना चाहिए।"

दूसरे शिष्य की पॉज़िटिव दृष्टि से गुरु जी बहुत प्रसन्न हो गए और प्रगति के लिए उसे आशीर्वाद दिया। एक ही गुरु के दो शिष्य, लेकिन दोनों की दृष्टि में कितना फर्क!

"मित्रों, हमें अपने जीवन में कैसी दृष्टि रखनी है वह हमें ही तय करना है। जैसी आपकी दृष्टि होगी वैसा ही आपको जगत् दिखेगा। तो हम पॉज़िटिव दृष्टि ही रखेंगे न?"

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

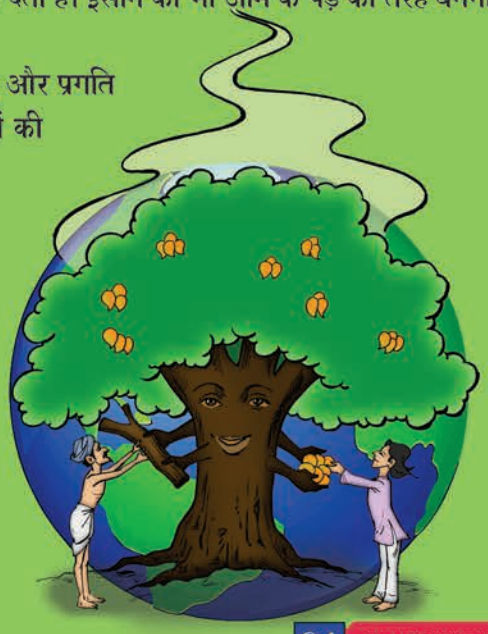

Kids.
dadabhagwan.org
Story Time
Fun Zone
Knowledge House
Gallery
Spiritual Masters
Activity
Blog
Main Site
Get Happiness with right understanding!
Welcome to Kids.
dadabhagwan.org

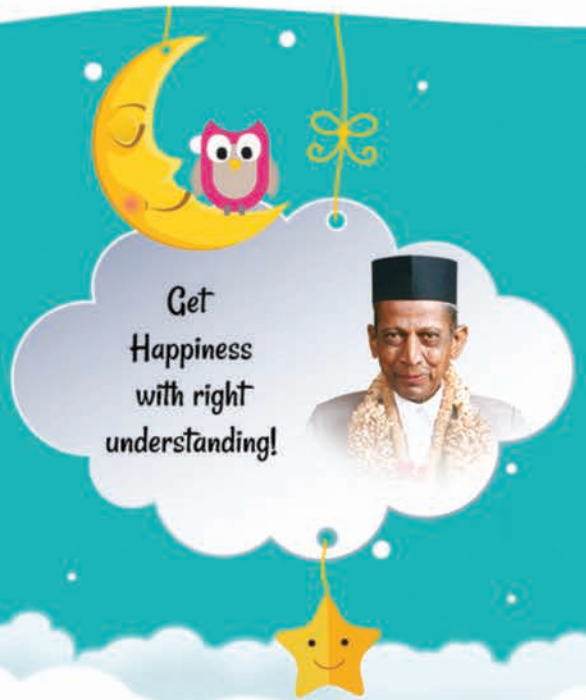

Akram Express
May 2017
Year : 5, Issue : 2
Conti. Issue No.: 50

BALVIGNAN
Fun 'n' Gyan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

मीठी यादें

दादा जी की बात है। अमरीका की एक महात्मा बहन को दादा के लिए बहुत भक्ति भाव था। जब दादा अमरीका जाते तब वे उनके घर ही निवास करते थे।

अमरीका में जब एक बार दादा उनके घर गए, तभी उन बहन का बर्थ डे था। उन्होंने सभी महात्माओं को खाने पर बुलाया। दादा ने उन्हें पास बुलाकर कहा, "आओ बैठो। आज तुम्हारा बर्थ डे है न! चलो, हम आज तुम्हें गिफ्ट देते हैं।"

उन बहन ने खाने में गाजर का हलवा बनाया था। दादा ने अपने हाथ से उन्हें खिलाया। फिर कहा, "जाओ, सब को बुला लाओ।"

वह बहन सभी महात्माओं को बुला लाई।

दादा ने कहा, "आज हम तुम्हें बहुत बड़ी गिफ्ट दे रहे हैं। औरंगाबाद में हम जो सामायिक करते हैं न वैसी ही सामायिक तुम्हारे बर्थ डे पर तुम्हें गिफ्ट देते हैं। आज तुम्हें एक-एक व्यक्ति के पैरों को धोकर आशीर्वाद लेने हैं।"

फिर अन्य सभी को कहा, "सभी को परस्पर एक-दूसरे के पैर छूने हैं।"

इस तरह दादा की हाज़िरी में सभी ने शुरू किया। सभी ने एक-एक के पैर छुए और सभी की आँखों से अश्रुधारा बह रही थी। छोटी बच्ची या बच्चा हो उसके भी पैर छुए।

दादा के आशीर्वाद से ऐसा अद्भुत बर्थ डे गिफ्ट प्राप्त करके वह महात्मा बहन तो धन्य हो गई।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published